क़ुरआन क्यों और कैसे सीखें (2 का भाग 1)

विवरण: क़ुरआन सीखने पर पहला पाठ जिसमे अल्लाह की किताब के साथ संबंध रखने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।
द्वारा Imam Mufti (© 2015 IslamReligion.com)
प्रकाशित हुआ 08 Nov 2022 - अंतिम बार संशोधित 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ >पवित्र क़ुरआन > क़ुरआन के समीप आना

उद्देश्य

· इस बात को समझना कि क़ुरआन अल्लाह का आशीर्वाद है और क़ुरआन के कुछ गुणों को सीखना।

· इस बात को समझना कि क़ुरआन आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उस वक्त थी जब इसे उतारा
गया था।

क़ुरआन के कुछ गुण

1. "फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये, तो जो
मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उनके लिए कोई डर नहीं
होगा और न वे उदासीन होंगे।" (क़ुरआन 2: 38)

क़ुरआन हमारे लिए अल्लाह का सबसे बड़ा आशीर्वाद है। यह आदम और उसके वंशजों के प्रति अल्लाह के वादे की पूर्ति है।

2. अपने डर और चिंता पर काबू पाने का यही एकमात्र साधन है। यह एकमात्र 'प्रकाश' (नूर) है, जैसा कि आप अंधेरे में टटोलते हैं, इससे आप सफलता और मोक्ष के लिए अपना रास्ता खोज सकते हैं। यह आपकी आंतरिक बीमारियों के साथ-साथ आपके आस-पास की सामाजिक बीमारियों के लिए एकमात्र उपचार (शिफा) है। पैगंबर मुहम्मद ने कहा,

"क़ुरआन एक मध्यस्थ है और इसकी मध्यस्थता स्वीकार की जाती है और इसकी दलील पर विश्वास किया जाता है। जो क़ुरआन को अपना मार्गदर्शक बनाता है - क़ुरआन उसे स्वर्ग में ले जायेगा और जो कोई इसे
अपने पीछे रखता है (परिणाम होगा) वह आग में घसीटा जायेगा।"[1]

क़ुरआन क्यों और कैसे सीखें (2 का भाग 1) 1 of 3 www.NewMuslims.com

3. पैगंबर मुहम्मद ने कहा, "आपको अल्लाह की याद और उसकी किताब के पढ़ने मे संलग्न होना चाहिए, क्योंकि यह आपके लिए पृथ्वी पर प्रकाश है और (एक साधन जिसके द्वारा) आपका उल्लेख स्वर्ग में किया जाएगा।"[2]

क़ुरआन आपके वास्तविक स्वरूप और नियति, आपके स्थान, आपके कर्तव्यों, आपके पुरस्कारों, आपके खतरों की निरंतर याद दिलाता है। इन सब चीज़ों से अधिक, यह निर्माता के करीब आने का एकमात्र तरीका है। यह आपको उसके बारे में, उसकी विशेषताओं के बारे में बताता है, कि वह ब्रह्मांड और इतिहास का राजा है, वह आपसे कैसे संबंधित है, और आपके संबंध उससे, अपने आप से, अपने साथी लोगों से और अन्य जीवित चीज़ों से कैसे होना चाहिए।

आपको यहां निश्चित ही बहुत इनाम मिलेंगे, परलोक के इनाम कई गुना बढ़ेंगे, लेकिन अंत में जो आपके लिए है, उसका एक हदीस कुदसी में अल्लाह ने वादा किया है,

"जो कभी किसी आंख ने नहीं देखी, किसी कान ने नहीं सुनी, और किसी दिल ने कभी कल्पना नहीं की", और अबू हुरैरा आगे कहते हैं, "यदि आप चाहें तो पढ़ें: 'तो नहीं जानता कोई प्राणी उसे, जो हमने छुपा रखा है उनके लिए आंखो की ठण्डक उसके प्रतिफल में, जो वह कर रहे थे।' (क़ुरआन 32:17)"[3]

क़ुरआन आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उस वक्त थी जब इसे
उतारा गया था

क़ुरआन का दावा है कि इसका मार्गदर्शन सभी लोगों के लिए एक शाश्वत प्रासंगिकता है, जो कि शाश्वत ईश्वर का वचन है। क़ुरआन, सदा जीवित रहने वाले ईश्वर का शाश्वत मार्गदर्शन है, यह आज भी हमारे लिए उतना ही प्रासंगिक है जितना कि 14 शताब्दी पहले था और हमेशा रहेगा। हमेशा रहने वाले ईश्वर के वचन को आने वाली सभी समयों के लिए मनुष्यों का मार्गदर्शन करने के लिए भेजा गया है।

इस दावे की सच्चाई के लिए, हमें क़ुरआन को प्राप्त करना, अनुभव करना और समझना सीखना होगा जैसा कि इसके पहले प्राप्तकर्ताओं ने किया था, कम से कम कुछ हद तक। दूसरे शब्दों में, एक विशेष भाषा और एक विशेष समय और स्थान पर रहस्योद्घाटन की ऐतिहासिक घटना के बावजूद, हमें अब क़ुरआन प्राप्त करने में सक्षम होना चाहिए क्योंकि इसका संदेश शाश्वत है।

जिन लोगों ने इसे पहली बार पैगंबर के मूंह से सुना, उनके लिए क़ुरआन एक जीवित वास्तविकता थी। उन्हें इस बात में कोई शक नहीं था कि अल्लाह पैगंबर के ज़रिए उनसे बातें कर रहा है। उनके दिल और दिमाग को क़ुरआन ने जब्त कर लिया था। उनकी आंखों से आंसू छलक पड़ते और शरीर कांपने लगता। उन्होंने इसे अपनी चिंताओं और अनुभवों के लिए गहराई से उचित पाया और इसे अपने जीवन में पूरी तरह से एकीकृत किया। इससे वे पूरी तरह से रूपांतरित हो गए। परिणामस्वरूप, वे लोग जो भेड़-बकरियां चराते थे और ऊंट पालते थे, वे मानवजाति के सरदार बन गए।

आज हमारे पास वही क़ुरआन है। भले ही लाखों प्रतियां प्रचलन में है, चूंकि अब हम क़ुरआन को एक जीवित वास्तविकता नहीं मानते हैं, हमारी आंखे सूखी रहती हैं, दिल पर कोई असर नही होता, मन अछूते रहते हैं, और हमारा जीवन अपरिवर्तित रहता है। क्या क़ुरआन हमारे लिए एक जीवित, प्रासंगिक शक्ति और आज भी उतना ही शक्तिशाली हो सकता है जितना 1400 साल पहले था? यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका हमें उत्तर देना चाहिए यदि हम क़ुरआन के मार्गदर्शन में अपने भाग्य को नए सिरे से आकार देना चाहते हैं।

हम इसे कैसे कर सकते हैं? उत्तर सरल है। हम क़ुरआन को पढ़ के और सीख के क़ुरआन की दुनिया में प्रवेश करे जैसे कि अल्लाह अभी और आज इसके माध्यम से हमसे बात कर रहा हो, और इसके लिए आवश्यक शर्तों को पूरा करके। अपने जीवन को क़ुरआन पर केन्द्रित करने से ही मुसलमान अपने अस्तित्व को अर्थ पाएंगे या इस दुनिया में सम्मान पाएंगे। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि क़ुरआन

क़ुरआन क्यों और कैसे सीखें (2 का भाग 1) 2 of 3 www.NewMuslims.com

सीखने पर जोर दिए बिना, हम अपने निर्माता और ईश्वर को कभी प्रसन्न नहीं कर सकते।
इसके संदेश को अपने जीवन का उतना ही वास्तविक हिस्सा बनाएं जितना कि यह पहले के विश्वासियों के लिए था और अपनी सभी वर्तमान चिंताओं और अनुभवों के लिए समान और गहन प्रासंगिकता के साथ।
क़ुरआन की कृपा असीमित है, लेकिन आप उससे कितना लेते हैं, यह पूरी तरह से आपकी क्षमता और उपयुक्तता पर निर्भर करता है। इसलिए सबसे पहले अपने आप को और अधिक गहराई से जागरूक करें कि क़ुरआन आपके लिए क्या मायने रखता है और यह आपसे क्या मांगता है।
अंत में, प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है कि वह क़ुरआन को पढ़ने, समझने और याद करने के लिए खुद को समर्पित करे। अगला पाठ क़ुरआन सीखने के तरीके पर केंद्रित होगा।

फुटनोट:

[1] इब्न हिब्बन

[2] तरग़िब व-तरहिब

[3] बुखारी, मुस्लिम

इस लेख का वेब पता:
http://www.newmuslims.com/hi/lessons/296

कॉपीराइट © 2011-2022 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।

ajsultan

क़ुरआन क्यों और कैसे सीखें (2 का भाग 1) 3 of 3 www.NewMuslims.com